RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 39 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 9 दिसम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-75, अंक : 39, 6-9 दिसम्बर 2018 तदनुसार 24 मार्गशीर्ष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सब एक-समान नहीं होते

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः।।
-यजुः १०।११७।९

शब्दार्थ-हस्तौ = दोनों हाथ **समौ+चित्** = एक समान होते हुए भी **समम्** = एक-समान **विविष्टः** = कर्म **न** = नहीं कर पाते। **सम्मातरा+चित्** = एक मातावाली होती हुई भी दो बछड़ियाँ **समम्** = एक समान **न** = नहीं **दुहाते** = दुहातीं, दूध देतीं। **यमयोः+चित्** = दो जोड़ियों के **समा** = एक-समान **वीर्याणि** = बल **न** = नहीं होते। **ज्ञाती+सन्तौ+चित्** = नातेदार होते हुए भी **समम्** = एक-समान **न** = नहीं **पृणीतः** = दूसरों की तृप्ति करते, अथवा दान नहीं देते।

व्याख्या-संसार में विषमता का राज्य दीखता है। दृष्टान्तों द्वारा वेद ने इस तत्त्व का बोध कराया है। शरीर में दायें-बायें हाथ में एक-सी शक्ति नहीं होती। एक गौ की दो बछड़ियाँ एक-समान दूध नहीं देतीं, साथ उत्पन्न दो भाई एक-से बलवान् नहीं होते, इसी भाँति दो सम्बन्धी एक-समान दानी नहीं होते। सृष्टि में यह विषमता प्रत्यक्ष है। इस विषमता से उलटी शिक्षा मत लो-अमुक दान नहीं देता, तो हम क्यों दें। प्रत्युत जो तुमसे हीनतर दशा में हैं, उनकी सहायता करो, उनके दुःख दूर करने के लिए प्रयत्न करो। इस विषमता का ऋग्वेद [१०।७१।७] में बड़ा सुन्दर निरूपण है। यहाँ दान का प्रकरण है, वहाँ ज्ञान का प्रकरण है-

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदध्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे।।

आँखों वाले, कानों वाले होते सुए सखा=एक-साथ ज्ञान प्राप्त करने वाले मनुष्य मन के वेगों में एक-समान नहीं होते। कोई मुख तक जल वाले तालाब के समान, कोई कक्ष=बगल तक आने वाले जलाशय के तुल्य और कोई डुबकी लगाकर नहाने योग्य जलाशयों के सदृश देखे जाते हैं।

गुरु शिष्यों को पढ़ा रहा है, आँख-नाक सभी के एक-साथ दीख रहे हैं, किन्तु कोई पाठ को समझ पाता है और कोई नहीं। इसका कारण यह है कि सबके मन-एक-समान नहीं होते। इसी मन की भिन्न अवस्था के कारण कोई महाज्ञानी हो जाते हैं, कोई मध्यम कोटि के विद्वान् और कोई साधारण ज्ञानवान् और कोई-कोई सर्वथा मूढ़ रह जाते हैं।

यह विषमता आकस्मिक नहीं है। जैसे विद्या के सम्बन्ध में मन की भिन्न अवस्थाएँ सबको एक-समान विद्वान् नहीं बनने देतीं, इसी प्रकार मन की ये भिन्न अवस्थाएँ मनुष्यों को एक-समान कर्म भी नहीं करने देतीं। कर्मभेद के कारण ही सारी विषमता है। जीवों की रुचियों के भेद के कारण प्रवृत्तिभेद इस विषमता का समाधान है। अल्पज्ञता के कारण किसी समय हमसे भी दुर्गतिदायक कर्म हो सकते हैं, उनके फलस्वरूप हम भी परमुखापेक्षी बन सकते हैं। उस दशा का विचार कर विचारशील मनुष्य अपने चित्त को करुणार्द्र बनाकर दीन-दुःखियों की सहायता में तत्पर हो जाता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

जीवात्मा का रहस्य

ले.-डा. निर्मल कौशिक, फरीदकोट

ईश्वर द्वारा रची गई इस सृष्टि का रहस्य समझ पाने हेतु हमारे धर्म ग्रन्थ, ऋषि, मुनि सिद्ध-साधक निरन्तर प्रयासरत रहे हैं।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक का सम्पूर्ण वाङ्मय इसी चेष्टा का परिणाम है। आजीवन जीव और ब्रह्म के अस्तित्व और सम्बन्धों को लेकर विद्वानों में मतभेद ही रहा है। द्वैत, अद्वैत, अद्वैताद्वैत विशिष्टाद्वैत अनेक विचारधाराए विकसित हुई। ईश्वरी सत्ता के निर्गुण और सगुण स्वरूप को निर्धारित करने के सन्दर्भ में अनेक सम्प्रदायों का विकास हुआ। भारतीय दर्शन शास्त्रियों ने जीव-(आत्मा), ब्रह्म (परमात्मा) और प्रकृति के सम्बन्ध में अपने-अपने अनुभव जन्य ज्ञान को ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत किया, मगर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकें। केवल शब्दिक व्याख्या करके ही मौन हो गए। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्रकृति का उदय होता है और प्रलय में समय सब समाप्त हो जाता है। ईश्वर का संकल्प सदा नित्य है। वह सत्, चित्, आनन्द स्वरूप, निराकार सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का कारण है वह कर्म फलदाता, न्यायकारी दयालु एवं आनन्द प्रदाता है।

जीव सत चित स्वरूप है और आनन्द का इच्छुक है। अल्पज्ञ होने के कारण जन्म मृत्यु के चक्र में आता है। अन्त:करण और शरीरादि की सहायता से कर्त्ता और भोक्ता है। कर्मबन्धन में पड़कर बार-बार जन्म मृत्यु के चक्र में पड़ता है। ईश्वर (परमपिता परमात्मा) से अलग होकर फिर उसी से मिलने की कोशिश में अनेक योनियों में जन्म लेता है। मनुष्य योनि अत्यन्त दुर्लभ है।

कहा भी है बड़े भाग मानुष तन पावा

सुर दुर्लभ सब ग्रन्थहि गावा

(रामचरितमानस)

प्रकृति का स्वरूप सत् है। ज्ञान और क्रिया से रहित है। ईश्वर या जीव से ही उसमें क्रियाशीलता आती हैं। संसार का उपादान है और माया स्वरूप है। इसमें रजस, तमस और तत्त्व गुण सम मात्रा में होते है। प्रकृति के महत्त्व से अहंकार अहंकार से पांच तन्मात्राएं (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) और पांच महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) तथा पांच ज्ञानेन्द्रियां (श्रोत्र, त्वचा, नेस, जिहवा, नासिका) पांच कर्मेन्द्रियां (वाक्, पाद, पाणि, चक्षु, नासिका) एवं मन की उत्पत्ति होती है। पूर्व जन्म के संस्कारों एवं ज्ञानोदय के कारण जीव के जन्म मरण से मुक्ति हो जाती है जिसे मोक्ष की अवस्था कहा जाता है। इस स्थिति में जीवात्मा अपने आत्मस्वरूप वास्तविक स्वरूप परम पिता परमात्मा से मिल जाती है। जीव का प्रकृति से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। प्रकृति (माया) का आवरण हट जाता है। अपने वास्तविक स्वरूप में रहते हुए जीव का परमात्मा से निरन्तर सम्बन्ध रहता है।

परमानन्द स्वरूप ब्रह्म को पाने के बाद वह क्रिया कलापों से मुक्त हो जाता है। इस अवस्था में उसे अपने अस्तित्व का मान भी नहीं होता। संसार से आसक्ति ही बन्धन है और ईश्वर से आसक्ति ही मोक्ष है। अज्ञानता के कारण ही जीव संसार को सत्य मान लेता है। जबकि संसार मिथ्या है, शरीर नश्वर है। जीवात्मा अजर, अमर है।

शरीर, धन, वैभव, जमीन, सम्पति को अपना मानकर जीवात्मा परमात्मा से दूर जाता है। यहां तक कि शरीर भी अपना नहीं है। इसे हम अपनी इच्छा से मृत्यु, बुढ़ापा, रोग आदि से बचा नहीं सकते। पंच महाभूत, अहंकार, बुद्धि, इन्द्रियाँ, मन, प्रकृति सहित सब शरीर के अन्तर्गत है। अत: शरीर से मोह करना व्यर्थ है। जीव केवल ईश प्रेरणा से कर्म करता है। लेकिन वह यह समझता है कि यह सब मैं कर रहा हूँ। यही अहंकार हैं गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं।

प्रकृते: क्रियमाणानि गुणै: कर्माणि: सर्वश:।

अहंकार विमूढ़ात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।3/27

''वास्तव में कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा किए जाते हैं। परन्तु अहंकार से मोहित अन्त:करण वाला पुरुष (अज्ञानी) मैं (ही) कर्त्ता हूँ ऐसा मान लेता है।

''परमात्मा न तो कर्त्तव्य को पैदा करते हैं, न कार्यों को करवाते है, न कर्म फल के साथ सम्बन्ध करवाते है। यह भगवान की रचना नहीं है। कर्तृत्व जीव ने स्वयं बनाया है। कर्म वह स्वयं करता है और फल भी स्वयं भोगता है। मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुरूप कर्म करता है परन्तु वह भ्रमित होकर कहता है कि वह कर्म प्रभु प्रेरणा से कर रहा है। वास्तविकता यह है कि जब तक मनुष्य में कर्तृत्व अभिमान है, फलेच्छा है। आसक्ति है कामना है तब तक प्रभु प्रेरणा से कार्य नहीं करता। वह कामना की प्रेरणा से कर्म करता है और उसका फल बन्धन होता है। (जीवन का सत्य-लेखक स्वामी राम सुखदास गीता प्रैस गोरखपुर) पृष्ठ 63-64। मृत्यु के पश्चात् आत्मा अपने कर्मों के अनुसार ही अच्छा अथवा बुरा शरीर, परिवार, देश आदि को प्राप्त करता है।

लगभग सभी ग्रन्थों ने कहा है कि शरीर नश्वर है आत्मा अमर है। मृत्यु के पश्चात् शरीर निश्चेष्ट (चेतन, विहीन) हो जाता है। आत्मा निकल जाती है। उसके साथ ही सग्रह पदार्थ यथा 5 प्राण+5 ज्ञानेद्रियां +5 महाभूत सूक्ष्म शरीर के रूप में जब नश्वर काया को छोड़ते है महाभूत तब मन तथा बुद्धि भी साथ ही चले जाते है। ईश्वर का विधान है कि जब स्थूल शरीर जीवात्मा के रहने के अनुकूल नहीं रहता (बुढ़ापा) दुर्घटना, आदि के कारण) तो जीवात्मा शरीर छोड़ देती है तो ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार जीव के कर्मफल के अनुसार उसे अन्य किसी योनि में भेज देता है।

वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार नया जन्म लेने से पूर्व आत्मा के नए शरीर में आने से पूर्व बारह अवस्थाओं में से गुजरना पड़ता है।

ऋग्वेद 10/14/9

यजुर्वेद 39/6 तथा अथर्ववेद 18/2/7 के प्रमाण से जीव सविता, अग्नि, वायु आदित्य, ऋतु, मरुत, बृहस्पति, मित्र (प्राण) वरुण (उदान) इन्द्र (बिजली) विश्वदेवा पृथ्वी, वनस्पतियों से होता हुआ पुन: नए गर्भ में प्रविष्ट होता है-इस बीच आत्मा को किसी कर्म का फल नहीं मिलता। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि सनातन परम्परा के अनुसार गरुड पुराण का पाठ, पिंडदान, श्राद्ध कर्म, तर्पण, तेरहवी पर क्रिया कर्म आदि सब किसके लिए किए जाते है? तीर्थो पर जाकर मृतक के नाम पर दान पुण्यादि करना ब्राह्मणों को भोजन कराना-यह सब किसके लिए? तो फिर गति या सहगति के नाम पर जो भी कर्मकाण्ड किया जाता है। उसका फल किसे मिलता है। यह विचारणीय प्रश्न है। स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, मोक्ष-पुनर्जन्म, कर्मफल, इन सब का जीवात्मा से क्या सम्बन्ध है? यह सब आज तक रहस्य ही बना हुआ है।

भावानुभूति के कारण ही हम जीव के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े रहते है। उसके न रहने पर भी कुछ दिनों तक उसका आभास होता है। उसी आभास के कारण हम उसके लिए दानपुण्यादि-पाठ पूजा और कर्मकाण्ड करते है। हमारे करने से उसे सदगति थोड़े मिलेगी। सद्गति तो ईश्वर देता है। जीव के कर्म देते हैं। हम तो केवल अपने मन को (सन्तोष) ढांढस देने के लिए यह सब करते हैं।

फिर भी हमारे जीवन में जो परम्पराएं सिद्धान्त, पद्धति युगों से चली आ रही है। वह हमारे जीवन-मृत्यु का अभिन्न अंग बन चुकी है। इसे हमने अपनी संस्कृति का एक प्रारूप मानकर अपना लिया है।

यह सब आत्म-शान्ति के लिए किया जाता है न कि आत्मा (बिछुड़ी) के लिए। हम यह सब करके स्वयं सन्तुष्ट हो जाते है कि हमने अपना कर्त्तव्य निभा दिया है। दानपुण्यादि से सामाजिक सन्तुलन बना रहता है। जरूरत मन्दों को वस्त्र, भोजनादि मिल जाता है। हमारे यहां की सामाजिक व्यवस्था ही ऐसी है कि हम हर संस्कार में लोकोपकार की भावना का भी ध्यान रखते है। जाने वाले जीव चले जाने के बाद भी लोक कल्याण करते हैं।

सम्पादकीय

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में आर्य समाज की भूमिका

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करते समय आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आज हमें इस बात पर विचार करना है कि हम महर्षि दयानन्द जी के उद्देश्यों के अनुसार कहां तक कार्य कर रहे हैं। समाज में फैल रही बुराईयों को देखते हुए लगता है कि आज महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये बहुत कार्य करना बाकि हैं। हम अपने संगठन को मजबूत बनाने के लिए प्रयास करें ताकि हम बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलन्द कर सकें और राजनीतिक दलों को मजबूर कर सके कि वे हमारा इस कार्य में सहयोग दें। आज राष्ट्र में जो बुराईयाँ और समस्याएं हैं उन समस्याओं पर विचार करें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते हुए अपनी मातृभाषा, अपनी सभ्यता, संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमारे सामने आज जो समस्याएं हैं सामाजिक कुरीतियां हैं, उन समस्याओं और कुरीतियों पर आर्य समाज को विचार करना होगा और आर्य समाज उन कुरीतियों को दूर करने में अपनी भूमिका किस प्रकार निभा सकता है? इस पर भी विचार करना होगा।

अश्लीलता-आज हमारा देश अनेक प्रकार की बुराईयों से जकड़ा हुआ है जिसके कारण हमारी सभ्यता और संस्कृति का नाश हो रहा है। हमारे देश में आज मनोरंजन के नाम पर अनेक प्रकार की अश्लीलता फैलती जा रही है। आज मनोरंजन के नाम पर ऐसी फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है जिसके द्वारा समाज में बुराईयां फैल रही है। वर्तमान समय में लोगों का खान-पान, रहन-सहन बदल गया है। आज लड़के और लड़कियां फैशन के पीछे भाग रहे हैं। परिणामस्वरूप समाज में बलात्कार जैसी घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। प्रसिद्धि पाने के चक्कर में संगीत में भी अश्लीलता का बाजार सरगर्म हो चुका है। सैंसर बोर्ड के द्वारा ऐसी ऐसी फिल्मों को प्रमाण पत्र दिया जाता है जिसके द्वारा समाज में अश्लीलता के सिवाय कोई संदेश नहीं मिलता। आज आवश्यकता है ऐसी फिल्मों के निर्माण की जिससे बच्चों को देशभक्ति की शिक्षा मिल सके, सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा मिल सके।

नशा उन्मूलन समाज-समाज में नशे के फैलने से युवा वर्ग इसमें बुरी तरह फंस चुका है। नशे की दलदल में फंसकर युवा शक्ति अपने भविष्य को बर्बाद कर रही है। जिस युवा शक्ति को राष्ट्र के भविष्य निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए वही युवा वर्ग आज लक्ष्य से हीन होकर अपने भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। नशे की चपेट में आकर हमारा देश निराशा के गर्त में डूबता जा रहा है। आज के स्वार्थी नेता अपने स्वार्थ के लिए युवा शक्ति का दोहन करके उन्हें नशे की दलदल में धकेल देते हैं। नशे के विरूद्ध लड़ने के लिए आज बहुत बड़े आन्दोलन की आवश्यकता है। इसके लिए युवा शक्ति को जगाना होगा। उन्हें उनके कर्त्तव्य का बोध कराना होगा। नशे को जड़ से खत्म करने के लिए हमें सरकार से भी सहयोग लेना चाहिए। जो पार्टी नशा उन्मूलन में सहायता देगी उसी को हम अपना जन समर्थन दें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बचाया जा सके। आज का युवा वर्ग आने वाले राष्ट्र का भविष्य है। अगर हम इस युवा पीढ़ी को चरित्रवान बना दें और नशे से मुक्त कर दें तो राष्ट्र का भविष्य संवर सकता है।

समलैंगिकता-सुप्रीम कोर्ट द्वारा धारा 377 को समाप्त करके समलैंगिकता को बढ़ावा देना भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात है। इस निर्णय के द्वारा भारतीय संस्कृति का पतन होगा। भारतीय संस्कृति वेदों पर आधारित संस्कृति है। वेद समस्त विश्व की धरोहर हैं। इनमें मानवीय विज्ञान की अभूतपूर्व व्याख्या है जिसके अनुसार समलैंगिकता मनुष्यता का कृत्य न होकर पशुता का कृत्य है और अमानवीय तथा अनैतिक आचरण है। कई सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के द्वारा सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को हताशापूर्ण बताया जा रहा है। इस फैसले का अधिकतर समर्थन वामपंथी विचारधारा के लोगों ने किया है। समलैंगिकता के द्वारा सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति ने मानव को केवल और केवल स्त्री-पुरूष के मध्य सम्बन्ध बनाने के लिए बनाया है। इससे अलग किसी भी प्रकार का सम्बन्ध अप्राकृतिक एवं निरर्थक हैं चाहे वह पुरूष-पुरूष के मध्य हो या स्त्री-स्त्री का हो वह विकृत मानसिकता को जन्म देता है। सत्य यह है कि भारतीय संस्कृति का मूल सन्देश वेदों में वर्णित है। वेदों की संस्कृति को भूलकर विकृत मानसिकता वाले लोग इस अप्राकृतिक कृत्य का समर्थन कर रहे हैं। हमारी संस्कृति में शिक्षा दी जाती है कि आचार: परमो धर्म: अर्थात सदाचार परम धर्म है और आचारहीनं न पुनन्ति वेदा: अर्थात् आचार से हीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अत: वेदों में सदाचार, पाप से बचने, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य आदि पर बहुत बल दिया गया है। इसलिए समलैंगिकता को समर्थन देना सामाजिक व्यवस्था को भंग करना है। समलैंगिकता को समर्थन देने से हम आने वाली पीढ़ियों को संस्कारवान तथा चरित्रवान नहीं बना सकते। अगर हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को चरित्रवान बनाना चाहते हैं तथा सभ्य समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें इस विकृत मानसिकता से बचना होगा। जो भी विकृत मानसिकता वाले लोग इस कुकृत्य का समर्थन करते हैं उनका हमें बहिष्कार करना चाहिए।

जाति प्रथा बढ़ने के दुष्परिणाम-समाज में फैल रही कुरीतियों का मुख्य कारण जाति प्रथा भी है। आज हमारा समाज अनेक जातियों में विभाजित हो चुका है। जाति प्रथा का भयंकर रूप समाज को विघटन की ओर ले जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में वर्ण व्यवस्था के विषय में लिखते हैं कि विद्या और धर्म के प्रचार का अधिकार विद्वान ब्राह्मण को देना चाहिए क्योंकि वे पूर्ण विद्यावान और धार्मिक होने से उस काम को भली प्रकार से कर सकते हैं। क्षत्रियों को राज्य के अधिकार देने से कभी राज्य की हानि वा विघ्न नहीं होता है। व्यापार या पशुपालनादि का अधिकार वैश्यों को ही देना चाहिए क्योंकि वे इस काम को अच्छे प्रकार से कर सकते हैं। शूद्र को सेवा का अधिकार इसलिए है कि वह विद्या रहित मूर्ख होने से विज्ञान सम्बन्धी काम कुछ भी नहीं कर सकता है किन्तु शरीर के सब काम कर सकता है। इस प्रकार सब वर्णों को अपने- अपने अधिकार में प्रवृत करना राजा आदि सभ्य जनों का काम है। अगर आज समाज में महर्षि दयानन्द जी की पद्धति के अनुसार कर्म व्यवस्था के अनुसार सभी वर्ग अपने-अपने कार्यों को करें तो समाज उन्नति कर सकता है।

जिन कुरीतियों के ऊपर विचार किया गया है, उसे दूर करने के लिये आर्य समाज को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। आर्य समाज को सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाना चाहिये। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना समाज को जागरूक करने के लिये की थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का उद्घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम् था। यह उद्देश्य तभी पूर्ण हो सकता है जब समाज कुरीतियों, बुराईयों, पाखण्डों और अन्धविश्वासों से मुक्त होगा। इसलिए आर्य समाज को इन सभी क्षेत्रों में कार्य करके महर्षि दयानन्द के सपनों के साकार करना होगा।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

घाव-अपामार्ग (चिर चिटा) के पत्तों को पीस कर लेप कर दें।

२. सदा हरी (लक्ष्मण बूटी, घाव पर्णी) के पत्तों को घाव पर बाँधें।

३. अमर बेल के बीज पीसकर चूर्ण बनाकर शहद के साथ घाव पर लगायें।

४. गूलर के पत्ते पीसकर घाव पर लगायें।

५. नीम के पत्ते ५० ग्राम लेकर आग पर गर्म करें। जब पत्ते काले हो जाए, तब उतार कर घोंटकर मल्हम बना लें इससे कैसा भी घाव हो पुराना से पुराना घाव शीघ्र ठीक होता है, अनुभूत है।

घुटनों का दर्द-१. सहजना के बीजों का तेल अदरक तथा सरसों को पीस कर लेप करे।

२. शुद्ध गूगल १० ग्राम गुड़ २० ग्राम मिलाकर पीसकर गोली बना लें १,१ गोली घी के साथ लें।

घ्राण शक्ति वर्धक-कलोंजी १० ग्राम ऊँट का मूत्र ३० ग्राम लेकर पकायें १० ग्राम मूत्र रह जाए तब छानकर शीशी में भर कर रख लें। इसको २,३ बार सुघावें।

चम्वल-१. पुनर्नवा (साँटी) की जड़ १२५ ग्राम सरसों के तेल में मिलाकर मरहम बना लें। इसको चम्वल के स्थान पर लगाये। रोग जड़ मूल से समाप्त होगा।

चश्मा छुड़ाने के लिए-१. स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी कटेरी) का अर्क २ बूँद सुबह सूर्योदय से पहले आँखों में डालें।

३. सफेद प्याज का रस आँखों में ड्रापर से डालें मात्रा २ बूँद।

चर्म रोगों के लिए-मुल्तानी मिट्टी शरीर पर मलें ५ मिनट बाद स्नान करें शरीर में चर्म रोग नहीं होंगे। त्वचा नर्मस्वच्छ होगी।

घबराहट-अजार दाना का चूर्ण २५ ग्राम मिश्री समभाग मिला कूट पीस छानकर रखें। ५ ग्राम प्रातः सायं पानी के साथ फाकें।

घाव-हल्दी पीसकर ग्वार के पाठे के गूदे में मिलाकर बाँधें।

चोला जाना-छोटी दुद्धी पानी में पीसकर चोरा वाले स्थान (कमर पर) मलें।

चौथैया ज्वर-१. सिरस के फूल, हल्दी खाने वाली जो नित्य सब्जी में प्रयोग करते हैं। तीनों वस्तुओं को बारीक पीस कर इसमें थोड़ा सा घी मिलाकर चौथैया ज्वर के रोगी को सुघायें। बुखार दूर हो जायेगा।

२. रविवार के दिन ओंघा के ५ ग्राम पत्तों को पीसकर गुड़ मिलाकर गोली बना लें। ३ गोली प्रातः दोपहर शाम को जल के साथ निगल जायें। ज्वर दूर हो जायेगा। अनुभूत योग है।

३. कलौजी ५ ग्राम को अत्यन्त बारीक पीसकर दिन में ३ बार शहद के साथ चटायें।

पीपल के पत्तों का काढ़ा पिलायें चर्म रोग दूर होते हैं।

चूहे भगाना-सफेद फिटकरी चूहे के आने जाने तथा बिल में डालें।

चेचक-सत्यानाशी का कोमल पत्ता लेकर थोड़े से गुड़ में मिला कर खिलायें। चेचक नहीं निकलेगी। बच्चों को तुलसी के बीज अजवायन पीसकर खिलायें।

चेचक के दाग-तुलसी पत्र सूखे गाय के दूध में पीसकर लगायें।

चोट-१. झाझरु (सरफों का) के ताजा पत्तों को बकरी के दूध में पीसकर लेप करें।

२. विजयसार लकड़ी का चूर्ण गर्म दूध के साथ सेवन करें।

चनूना-नीबू के पत्तों का रस १० ग्राम शहद १० ग्राम दोनों को मिलाकर १५ दिन पिलायें।

छींक जाना-हरा धनियाँ, सफेद चन्दन का बुरादा दोनों को पीसकर चूर्ण बनाकर सूंघें।

छपाकी-१. गुड़ ५० ग्राम, अजवायन ५० ग्राम दोनों को मिलाकर गोली बना लें। ताजा पानी के साथ सेवन करें अनुभूत हैं।

२. त्रिफला चूर्ण को शहद के साथ खिलाने से छपाकी दूर होती है।

क्षय-आक की कली प्रथम दिन एक, दूसरे दिन २ तीसरे ३ नित्य प्रति खाते रहें अति लाभप्रद है।

छाजन-१. सत्यानाशी कटेरी का दूध लगायें।

२. अपने पेशाब में छाजन को धोयें, सिरके में प्याज के बीज पीस कर लेप करें।

जलोदर-पत्थर के कोयले की राख (श्वेत) ५. ग्राम प्रात सायं ताजा जल के साथ लें।

जिगर-१. ग्वार के पाठे का अर्क (रस) ५ ग्राम सैंधा नमक १ ग्राम मिलाकर पियें।

२. हरे करेलों का रस ५० ग्राम प्रतिदिन १ माह सेवन करें।

जुकाम-१. सोंठ, काली मिर्च, बूरा मिलाकर गर्म जल के साथ दिन में उवार लें।

२. १ कप दूध में १ चम्मच हल्दी डालकर गर्म-२ पियें। चाय की तरह।

जुयें-१. नीम की निवौली खूब घोंटकर पानी के साथ जुओं की जगह पर लगायें।

२. प्याज का रस सिर में लगायें।

झमा चक्कर आना-तुलसी के पत्तों का रस चीनी मिलाकर पिलायें।

जलन-अनार दाना ५० ग्राम १ किलो पानी में मिट्टी के बर्तन में भिगो दें ३ घन्टे।

जाला-१. बड़ का दूध नित्य प्रति आँखों में डालने से जाला कट जाता है।

जलन-वाद छानकर मिश्री मिलाकर पिलायें।

२. छोटी हरड़ का चूर्ण शहद में मिलाकर चटायें।

३. वेलगिरी का शर्बत पिलायें।

जख्म-१. लहसन को पानी में पीसकर जख्म को धोयें।

२. खरेंटी का रस जख्म पर लगायें।

३. दूव का रस से घाव ठीक हो जाता है।

४. अपामार्ग १ चिरचिटा का लेप करें।

जाला-कटेरी फल की जड़ नींबू रस में मिलाकर लगायें तो जाला नष्ट होता है। रात्रि को आँखों में लगायें।

जले हुए घाव पर-१. आलू को पीस कर लेप करें जले स्थान को हवा न लगे। लेप गाढ़ा करें।

२. शहद का लेप करें।

३. हींग पीसकर मूर्गी के पर से जले स्थान पर दिन में ४-५ वार लगायें फफोला नहीं पड़ेगा, लगाते ही चैन पड़ जायेगा।

आग से न जलना-अकर करा और नौसादर पीसकर रगड़ लें हाथ पर आग रख लो। जलेगा नहीं, मुँह में लगाने पर मुँह नहीं जलेगा।

ज्वर-जाड़ा देर बुखार आये जूड़ी ज्वर कहलाता है।

इकतरा, तिजारी, चौथैया नाम धराता है।।

१. रविवार के दिन अपामार्ग (चिरचिटा) के ५ ग्राम पत्ते बारीक पीसकर गुड़ में मिलाकर मटर जैसी गोली बना लें। वारी के दिन इसकी तीन गोली पानी के साथ निगल लें। बुखार नहीं आयेगा। अनुभूत है।

जीभ में छाले-शीतल चीनी, वंशलोचन, छोटी इलायची सम भाग मिश्री मिलाकर मक्खन से लें।

जंगल विषहर-१. कटेरी सत्यानाशी पीले फूल वाली के बीज १० ग्राम काली मिर्च ३ ग्राम पीसकर जल के साथ प्रयोग करें। ५ दिन के भीतर पागल कुत्ते का विष दूर हो जायेगा।

२. द्रोण पुष्पी (गूमा) का रस ५ ग्राम सुबह शाम ३ दिन पिलाऐं पागल कुत्ते का विष दूर होगा।

ज्वर हरण-अपामार्ग (ओंघा) के पत्ते २० ग्राम पुराना गुड़ २० ग्राम पत्तों को धोकर पीसकर गुड़ में मिला गोली मटर जैसी बना लें। २ गोली १-१ घन्टे के अनुपात से खिलाऐं ज्वर आने से पहले ३ बार खिला दें।

जीर्ण ज्वर पर-जंगी हरड़, श्वेत जीरा, सोंफ, मिश्री सम भाग लेकर चूर्ण बना ३ माशा जल के साथ फाकें।

जीभ रोग-शीतल चीनी, वंश लोचन, छोटी इलायची सम मिश्री मिला कर चाटें। दिन में ३ वार प्रयोग करें।

जाला-सत्यानाशी कटेरी की जड़ नीबू रस में पीसकर आँखों में लगाऐं,

२. फिटकरी बारीक पीस कर थोड़ी चीनी मिलाकर रख लें। बुखार आने से ३ घन्टे पहले रोगी को जल के साथ फँका दें। दूसरी मात्रा बुखार से १ घन्टे पहले दें बुखार नहीं आयेगा।

जोड़ों का दर्द-पीली हरड़ का वक्कल (छिलका) एलवा, सुर-जान मीठी तीनों समभाग ग्वार के पाठे के रस में खरल कर मटर के बराबर गोली बनाकर शीशी में रख लो प्रातः सांय २-२ गोली गर्म जल के साथ प्रयोग करें जोड़ों के दर्द के लिए रामबाण औषधि है।

झाइयाँ-आंवला बारीक पीस कर मक्खन में मिलाकर मुँह पर मालिश करें।

टान्सिल-(गले का दर्द) अलसी के बीज पीसकर घी में मिलाकर अग्नि पर गर्म करके पुल्टिस बना लें और गले में बाधें।

टिटनिस-मोर के अण्डे का खोखला का पाउडर बनाकर रख लें रोगी ३ ग्राम ३ वार लाभ होगा।

टी० वी० (क्षय)-१. गाय का मक्खन १० ग्राम शहद २० ग्राम दोनों को मिलाकर दिन में ३ बार चाटें। सूर्य ताप सेवन करें। ब्रह्मचर्य का विशेष पालन करें। राजयक्ष्मा रोग निमूल हो जाता है। (क्रमशः)

अध्यापन प्रश्नोत्तर विधि से हो

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

अध्यापन की कई विधियां है जैसे प्रयोगात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली और प्रश्नोत्तर शैली के विषय में वर्णन प्राप्त होता है परन्तु उसमें सबसे अधिक बल प्रश्नोत्तर विधि पर दिया गया है। यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या 45 में से 62 तक इसी विधि को काम में लिया गया है।

कः स्वेदाकाकी चरतिकऽ-उस्विज्जायते पुनः।

किꣳस्विद्भिमस्य भेषजं किम्वा-वपनं महत्। यजु. 23.45

पदार्थ-इस संसार में (कः स्वित्) कौन (एकाकी) अकेला (चरति) चलता है (उ) और (कः स्वित्) कौन (पुनः) फिर फिर (जायते) उत्पन्न होता (किं स्वित्) कौन (हिमस्य) शीत का (भेषजम्) ओषध (किम् उ) और क्या (महत्) बड़ा (आवपनम्) अच्छी प्रकार बीच दोनों का आधार है। इसको आप बताओ।

इस मंत्र में प्रश्न पूछे गये हैं-1. अकेला कौन चलता रहता है 2. कौन बार-बार उत्पन्न होता है। 3. शीत की निवृत्ति क्या है और 4. उत्पत्ति का स्थान कौन सा है। इन प्रश्नों का उत्तर अगले मंत्र में दिया गया है।

सूर्य्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।

अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्। यजु. 23.46

सूर्य अकेला अपनी ही परिधि में घूमता है किसी अन्य आकाशीय पिण्ड के चारों ओर नहीं घूमता। चन्द्रमा बार-बार उत्पन्न होता है। चन्द्रमा में प्रतिदिन नयापन होता है क्योंकि वह प्रतिदिन घटता बढ़ता रहता है। अग्नि शीत का नाशक है और पृथ्वी बीज वपन करने के लिए बड़ा स्थान है। अगले मंत्र में पुनः प्रश्न पूछा गया है-

किꣳस्विवत्सूर्यसमं ज्योतिः किꣳसमुद्रसम सरः।

किꣳस्वित्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते। यजु. 13.47

सूर्य के समान प्रकाशक, समुद्र के समान जलाधार, पृथ्वी से बड़ा कौन है। किसका परिमाण नहीं है? वे चार प्रश्न हैं जिनका उत्तर अगले मंत्र में दिया गया है।

ब्रह्म सूर्य समं ज्योति र्द्यौः समुद्रासमꣳसरः।

इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते।। यजु. 13.48

ब्रह्म सूर्य के समान प्रकाशमान हैं, अन्तरिक्ष समुद्र के समान जल के ठहरने का स्थान है। सूर्य पृथ्वी से बहुत बड़ा है तथा वाणी का परिमाण नहीं होता।

पृच्छामित्वाचित्तये देवसखयदि त्वमत्र मनसा जगन्थ।

येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टस्तेषु विश्व भुवजमाविवेशां।

यजुर्वेद 13.49

भावार्थ-हे विद्वान्। जो चेतन स्वरूप, सर्वव्यापि, पूजा, उपासना, प्रशंसा, स्तुति करने योग्य परमेश्वर है उसका मेरे लिए उपदेश करो।

अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमा विवेश।

सद्यः पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाङ्गेन दिवोऽअस्य पृष्ठम्। यजु. 13.50

भावार्थ-जैसे सब जीवों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि मैं कार्य कारणात्मक जगत् में व्यापक हूँ। मेरे बिना एक परमाणु भी अव्यापक नहीं है। सो मैं जहाँ जगत् नहीं है वहाँ भी अनन्त स्वरूप से परिपूर्ण हूँ। जो इस अतिविस्तार युक्त जगत् को आप देखते हो वह मेरे आगे अणुमात्रा भी नहीं है इस बात को वैसे ही विद्वान् सबको बतावे। फिर प्रश्न किया गया है-

केष्वन्तः पुरूषऽआ विवेश-कान्यन्तः पुरूषेऽअर्पितानि।

एतद् ब्रह्मन्नुप वल्हाममसित्वा किं स्विन्नः प्रति वोचास्यत्र। यजुर्वेद 23.51

हे (ब्रह्मन्) वेदज्ञ विद्वान्! (केषु) किन में (पुरूषः) सर्वत्र पूर्ण परमेश्वर (अन्तः) भीतर (आ विवेश) प्रवेश करता रहा है और (कानि) कौन (पुरूषे) पूर्ण ईश्वर में (अन्तः) भीतर (अर्पितानि) स्थापन किये है जिस ज्ञान से हम लोग (उप वल्हामसि) प्रधान हों (एतत्) यह (त्वा) आपसे पूछते हैं तो (किं स्वित्) क्या है (अत्र) इसमें (नः) हमारे (प्रति) प्रति (वोचासि) कहिए।

अगले मंत्र में इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है।

पञ्चस्वन्तः पुरूषऽआविवेश तान्यन्तः पुरूषेऽअर्पितानि।

एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानोऽअस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत्। यजु. 23.52

भावार्थ-परमेश्वर उपदेश करता हैं कि हे मनुष्यों। मेरे ऊपर कोई भी नहीं है। मैं ही सबका आधार सब में व्याप्त हूँ। सबको धारण करता हूँ। मेरे व्याप्त होने से सब पदार्थ अपने नियम में स्थित हैं। आप लोग मेरे इस विज्ञान को जानो।

कोऽअस्य वेद भुवनस्य नाभि को द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम्।

कः सूर्य्यस्य वेदबृहतोजनित्रं को वेदचन्द्रमसं यतोजाः यजु. 23.59

पदार्थ-हे विद्वान्। (अस्य) इस (भुवनस्य) सबके आधार भूत संसार के (नाभिम्) बन्धन के स्थान मध्य भाग को (कः) कौन (वेद) जानता (कः) कौन (द्यावा पृथ्वी) सूर्य और पृथ्वी तथा (अन्तरिक्षम्) आकाश को जानता (कः) कौन (बृहतः) बड़े (सूर्य्यस्य) सूर्य मण्डल के (जनित्रम्) उपादान अथवा निमित्त कारण को (वेद) जानता और जो (यतोजाः) जिस से उत्पन्न हुआ है उस चन्द्रमा के उत्पादक को और (चन्द्रमसं) चन्द्र लोक को (कः) कौन जानता है इनका समाधान कीजिए।

अगले मंत्र में इन प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं।

वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिवेद द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम्।

वेद सूर्य्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजाः। यजु. 23.60

हे जिज्ञासु पुरूष। इस जगत् के बन्धन अर्थात् स्थिति के कारण प्रकाशित अप्रकाशित मध्यस्थ आकाश इन तीनों लोकों के कारण और सूर्य, चन्द्रमा के उपादान और निमित्त कारण इस सबको मैं जानता हूँ। ब्रह्म ही इन सबका निमित्त कारण और प्रकृति उपादान कारण है।

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।

पृच्छामि त्वा वृष्णोऽअश्वस्यरेतः पृच्छामिवाचः परमं व्योम्। यजु. 23.61

हे विद्वान्। मैं आपसे पृथ्वी के पर भाग अवधि को पूछता हूँ। जहाँ इस लोक का खेंच कर मध्य में बन्धन किया गया है-उसको पूछता हूँ। जो सेचन कर्ता बलवान पुरूष का पराक्रम है उसको पूछता हूँ और वेद रूप वाणी के तीन उत्तम आकाशरूप स्थान को आपसे पूछता हूँ आप उत्तर दीजिए।

इन प्रश्नों के उत्तर अगले मंत्र में दिये गये हैं।

इयं वेदिः परोऽअन्तः पृथिव्याऽअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।

अयं सोमो वृष्णोऽअश्वस्यरेतो ब्रह्मायं परमं व्योम।। यजु. 23.62

भावार्थ-हे मनुष्यों। जो इस भूगोल की मध्यस्य रेखा की जावे तो वह ऊपर से भूमि के अन्त को प्रान्त होती हुई व्यास संज्ञक होती है, यही भूमि की सीमा है। सब लोगों के मध्य आकर्षण कर्ता जगदीश्वर है। सब प्राणियों को पराक्रमकर्ता ओषधियों में उत्तम अंशुमान आदि सोम है और वेदपारग पुरूष वाणी का पारगन्ता है यह तुम जानो।

अब हम अध्याय 31 से इसी प्रकार के दो मंत्र देकर विषय को विराम देगें।

यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत्किं बाहु किमुरू पादाऽउच्येते। यजु. 31.10

हे विद्वानों! आप (यत्) जिस (पुरूषम्) परमेश्वर को (वि अदधुः) विचित्र प्रकार से धारण करते हो उसको (कतिधा) कितने प्रकार से (वि अकल्पयत्) विशेष कर कहते हैं और (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (मुखम्) मुख के समान श्रेष्ठ (किम्) कौन (आसीत्) है। (बाहु) भुज बल का धारण करने वाला (किम्) कौन (ऊरू) घोटूं के कार्य करने वाले और (पादौ) पांव के समान निचले स्थान के (किम्) कौन (उच्येते) कहे जाते हैं।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ-शूद्रोऽअजायत। यजु. 31.11

हे जिज्ञासु लोगों। तुम (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (ब्राह्मणः) ईश्वर और वेद ज्ञाता (मुखम्) मुख के समान ब्राह्मण (आसीत्) है। (बाहू) भुजाओं के तुल्य (राजन्यः) क्षत्रिय (कृतः) किया (यत्) जो (ऊरू) जांघ के तुल्य (तत्) वह (अस्य) इसका (वैश्या) वैश्य है। (पद्भ्याम्) सेवा और अभिमान रहित होने से (शुद्रः) शूद्र (अजायत) उत्पन्न हुआ है। यजुर्वेद में ऐसे और भी प्रश्नोत्तर है परन्तु लेख की सीमा अधिक न हो जाये इसलिए इसे यहीं विराम देते हैं।

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बटाला का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल औहरी चौक बटाला के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पूर्व मंत्री श्रीमती लक्ष्मी कांता चावला बच्चों को पारितोषिक वितरण करती हुई। उनके साथ खड़े हैं प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री प्रविन्द्र चौधरी जी एवं अन्य सदस्य। जबकि चित्र दो में स्कूल के बच्चे कार्यक्रम पेश करते हुये।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की बदौलत आज समाज में नारी को सम्मान व स्थान मिल पाया है जबकि स्वामी दयानन्द जी न होते तो संभव है कि नारी जाति अभी भी 50 वर्ष पीछे चल रही होती। यह शब्द स्थानीय आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल औहरी चौक बटाला के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल पूर्व मंत्री श्रीमती लक्ष्मी कांता चावला ने व्यक्त किये। श्रीमती चावला ने कहा कि नारी जाति को शिक्षा दिलाने का जो बिगुल स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने बजाया था। आज उसी का परिणाम है कि मैरीकॉम जैसी बिटिया मुक्केबाजी में छटी बार विश्व चैम्पियन बनी है। मगर दुख इस बात का है कि आज भी हमारा पुरुष समाज नारी जाति को पीछे की ओर धकेलने का प्रयास कर रहा है। उदाहरण स्वरूप उन्होंने कहा कि नगर परिषदों, पंचायतों में भागीदार होने के पश्चात भी पुरुष समाज उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य को स्वयं ही करके उन्हें मात्र अंगूठा छाप बना रखे हुये हैं। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा देशभक्ति के कार्यक्रम को देखकर उन्हें प्रेरणा दी कि हमें उन अनगिनत शहीदों जिनके नाम भी गिन नहीं सकते, के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये और इसी कड़ी के अंतर्गत समाज को नशे इत्यादि की बुराइयों से बचाने का प्रयास करना चाहिये। इससे पूर्व स्कूल प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष परविन्द्र चौधरी ने बताया कि उनकी संस्था निर्धन वर्ग के बच्चों को केवल स्कूल तक ही नहीं बल्कि उच्च शिक्षा दिलाने में पूरा सहयोग करती है। उन्होंने समाज के बुद्धिजीवी वर्ग से अपील की कि वह अंधविश्वास के खिलाफ एकजुट होकर इसे रोकना चाहिये। स्कूल की प्रिसीपल नीरू सैली ने स्कूल की शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों की जानकारी दी और बताया कि निर्धन व मध्यम वर्ग के बच्चों के होने के बावजूद उनके बोर्ड परिणाम शत प्रतिशत रहते हैं। इस अवसर पर जतिन्द्र नाथ शर्मा, डा. रविन्द्र महाजन, अशोक अग्रवाल, डा. नरेन्द्र खुल्लर, प्रो. अश्विनी कांसरा, स्कूल प्रबन्धक विजय अग्रवाल, कुलदीप महाजन, बलविन्द्र मेहता, के.एल. गुप्ता, भूषण बजाज, शक्ति शर्मा, प्रिं. हरीकृष्ण महाजन, पदम कोहली, सोहन लाल प्रभाकर, रविन्द्र चौधरी, अरुण अग्रवाल, राम रक्खा, सुनील सरीन, सुरेश महाजन, प्रि.अशोक पुरी भी उपस्थित थे।

ऋषि को याद किया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 25-11-2018 (रविवार) को ऋषि बलिदान दिवस के उपरान्त पुन: ऋषि को याद किया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री कुलदीप राय आहलुवालिया ने यजमान पद को सुशोभित किया। नगर से पधारे आर्य जनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली। तत्पश्चात स्वामी दयानन्द के जीवन से कुछ घटनाओं को लेकर एक परिचर्चा हुई। कार्यक्रम के शुरू में मंच से ''हुई टंकारा टंकारा से-बसेरा पा लिया खग ने'' नामक कविता से सारगर्भित हुंकार भरी, फिर श्रीमती उपासना वहल ने ऋषि जीवन पर मार्मिक भजन गाकर उपस्थित आर्यजनों को भाव विभोर कर दिया। इस सभा के मुख्य उदबोधन में प्रो० डा० पी० एन चोपड़ा ने ऋषि की याद को ताज़ा किया और कहा कि आज के दिन समूची मानवता को स्वामी दयानन्द जी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने की आवश्यकता है।

डॉ. चोपड़ा ने अपने ही अतीत में जाते हुए कहा कि किस प्रकार विभाजन के समय उनका परिवार आर्य समाज मन्दिर में एक महीना भर ठहरा और आज वह छ: वर्ष का बालक आर्य समाज मन्दिर के प्राचीर से सीख लेकर कमालपुर की इस समाज में ऋषि दयानन्द के जीवन को उजागर कर रहा है। सचमुच देव दयानन्द सदियों में फैले अन्धकार को प्रकाश में परिवर्तित कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर गये। प्रश्न आज के दिन सता रहा है कि क्या हम उस प्रकार की लौ में आपसी फूट और बेचैनी से उभर कर अपने जीवन को सार्थक बना पायेंगे। अंत में शान्ति पाठ के बाद ऋषि प्रसाद बांटा गया। **-यश आर्य**

महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला का 54वां वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 17 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2018 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद के प्रवचन तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन होंगे। प्रतिदिन प्रात: 8:00 से 10:00 बजे तक तथा सांयकाल को 5:30 से 7:30 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। 23 दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया जायेगा। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस वार्षिक उत्सव में अपने इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

-राजिन्द्र विज महामन्त्री महर्षि दयानन्द मठ

आर्य समाज मंदिर बस्ती दानिशमंदा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा, लसूड़ी मुहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2018 तक बड़ी श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री विजय कुमार शास्त्री के प्रवचन तथा श्री सुरेन्द्र आर्य के मधुर भजन होंगे। 16 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक प्रात: 6.00 बजे प्रतिदिन प्रभात फेरियों का आयोजन किया जाएगा। प्रतिदिन सायंकाल 7.30 से 9.30 बजे बजे तक भजन व प्रवचन होंगे। 22 दिसम्बर 2018 को दोपहर 2.00 बजे आर्य समाज के प्रांगण से शोभा यात्रा का आयोजन भी किया जायेगा। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस वार्षिक उत्सव में अपने इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

-यशपाल आर्य प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के वार्षिक उत्सव के अवसर पर हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन जबकि चित्र दो में उत्सव में शामिल लोग। चित्र तीन में आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के प्रधान डा. विजय सरीन जी एवं श्रीमती पूजा और श्री ब्रजेश पुरी ज्योति प्रज्जवलित करते हुये।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 23 से 25 नवम्बर 2018 तक बड़ी श्रद्धा, उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज के सुसज्जित सत्संग भवन में शुक्रवार 23 नवम्बर को प्रात: मंगल यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित पं. बालकृष्ण जी शास्त्री थे। 23 एवं 24 नवम्बर को क्रमश: श्रीमती रूबल एवं चेतन बस्सी जी तथा श्रीमती अर्चना एवं आशीष भनोट जी तथा अन्य सभी यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। पं. नरेन्द्र आचार्य जी ने मंत्रोच्चारण में सहयोग दिया।

उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि के सत्र में हुआ। आर्य जगत की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका अंजलि आर्या जी ने प्रतिदिन भजनोपदेश किया। उन्होंने परमात्मा को हमारे जीवन का आधार बताते हुये अपने मधुर स्वर में प्रभु भक्ति के भजन सुबह शाम तुम आंखें मूंद कर ध्यान उसी का कर लेना, दुर्गुण सारे दूर भगा दो, यही प्रार्थना कर लेना तथा जग के पालक सबके स्वामी तेरा ढंग निराला है, जीव जहां जो पैदा किया है तूने सब को पाला है सुना कर उपस्थित आर्यजनों को आनन्दित किया। रात्रि के सत्र में अंजलि आर्या जी ने बतलाया कि हमारी आत्मा हमारे सुकर्मों की सुगन्धि एवं दुष्कर्मों की दुर्गन्ध को अनुभव करती है। अच्छे कर्म करने पर ऐसा अनुभव होता है जैसे किसी ने पीठ थपथपाई हो और इसके विपरीत दुष्कर्म करने से पहले हमारे मन में लज्जा, भय व शंका उत्पन्न होती है। अपने गीतों के माध्यम से सब को सचेत करते हुये गीत की पंक्तियां प्रस्तुत की, बातों ही बातों में बीती रे उमरिया, तुझे होश न आया यूं ही वक्त गंवाया। इसी प्रकार 24 नवम्बर प्रात: यज्ञ के उपरान्त बहिन अंजलि आर्या जी के मनोहर भजन हुये जिससे वातावरण आनन्दमय हो गया। रात्रि की बैठक में जीवन सुधार, राष्ट्र भक्ति एवं महर्षि दयानन्द पर आधारित भजनों व उपदेश द्वारा उपस्थित जनता में उत्साह एवं उल्लास भर दिया। आर्य जन महर्षि दयानन्द का गुणगान सुन कर भाव विभोर हो उठे।

उत्सव का समापन समारोह 25 नवम्बर रविवार प्रात: साढ़े आठ बजे से आरम्भ हुआ। पांच यज्ञ कुंडों पर बैठे यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। यज्ञ की सुगन्धि एवं वेद मंत्रों के उच्चारण से वातावरण आनन्दमय बन गया। इस पवित्र व शान्त वातावरण में यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। सभी यजमानों को विद्वानों द्वारा आशीर्वाद एवं धार्मिक पुस्तकें तथा प्रशाद रूप में फल दिये गये। सब को यज्ञ शेष व प्रात:राश वितरित किया गया। यज्ञ के उपरान्त लुधियाना के प्रतिष्ठित परिवार श्रीमती पूजा एवं श्री बृजेश पुरी ने ज्योति प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का आरम्भ किया। सुप्रसिद्ध अमर उद्योग के मालिक श्रीमती नीलम एवं श्री अरुण थापर ने अपने कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया। सुन्दर बैंड की ध्वनि से सभी को आकर्षित किया। पं.योगराज शास्त्री ने ध्वज गीत गाया। आर्य समाज की ओर से इन दोनों परिवारों को स्मृति चिन्ह भेंट किये गये।

मंच का संचालन करते हुये आर्य समाज के महामंत्री श्री अनिल कुमार ने विद्वानों व आर्यजनों का अभिनन्दन किया तथा पं. राजेन्द्र व्रत जी को भजन प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया। उन्होंने प्रभु तेरा ओ३म नाम सब का सहारा है भजन सुनाने के बाद सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस उत्सव में देवकी देवी जैन मैमोरियल कालेज फार वूमैन लुधियाना की पांच छात्राओं को बी.ए. फाइनल में परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशि से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती ने कहा कि पिछले पांच हजार वर्षों में विश्व के अंदर फैले मतों में कुछ कुछ सत्य है लेकिन पूर्ण सत्य केवल मात्र सनातन वैदिक धर्म में ही है। उन्होंने आगे कहा कि विश्व की सभी सामाजिक एवं धार्मिक समस्याओं का समाधान केवल वेद द्वारा ही किया जा सकता है इसलिये आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। स्वामी दयानन्द ने वैदिक दृष्टिकोण से सृष्टि रचना की व्याख्या कर वेद के विरूद्ध चलने वाले मतों के धर्म गुरुओं को शास्त्रार्थ कर पराजित किया। वर्तमान में चल रही दुख लालच से जुड़ी भक्ति कभी भी मोक्ष की ओर नहीं ले जा सकती। केवल व केवल मात्र आर्य समाज की वेदी से ऋषियों की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार द्वारा ही मोक्ष का रास्ता सुलझ सकता है।

आर्य समाज के प्रधान डा. विजय सरीन जी ने उत्सव की सफलता के लिये परमात्मा का धन्यवाद किया। तदोपरान्त सभी विद्वानों, संगीतज्ञों तथा उपस्थित आर्य जनता का धन्यवाद किया। लुधियाना जिला की सभी आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं के साथ साथ नगर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने बहुसंख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाया तथा उत्सव की शोभा को बढ़ाया। कार्यक्रम के उपरान्त दोपहर डेढ़ बजे सभी ने मिल कर प्रीतिपूर्वक ऋषि लंगर ग्रहण किया।

आर्य समाज जवाहर नगर के उपप्रधान श्री राजेन्द्र बेरी, बृजमोहन अरोड़ा, कोषाध्यक्ष राजीव गुप्ता, संजीव गुप्ता, अजय मोंगा, ओम प्रकाश गुप्ता, श्रीमती अनुपमा गुप्ता, स्वर्ण कौर, ममता शर्मा तथा अन्य सदस्यों एवं बच्चों ने बड़ी लग्न से कार्य किया। भिन्न भिन्न आर्य समाजों से सर्वश्री मोहन मेहता, अतुल मेहता, पदम औल, जगदीश बस्सी, वी.के.स्याल, सतपाल नारंग, सुरेन्द्र टंडन, संत कुमार आर्य, सुमित टंडन, संजीव चड्ढा, विनोद सूद, रमेश सूद, हर्ष आर्य, बाला गम्भीर, किरण टंडन, जनक आर्या, राजेश शर्मा, रणवीर शर्मा, आर.पी. गोयल, जनक भगत, योगराज शास्त्री, विनोद गर्ग, महेन्द्र प्रताप, विजय करण गुप्ता, कर्मवीर गुलाटी, विकास बत्रा, संजय बिरमानी, डा.एसके सेठ, डा. के.एल. बजाज, अजय बत्रा, संजय बिरमानी, डा.एस.के. बांगिया, डा. सुमन शारदा, राखी डांग, प.अर्जुन देव, पं. महेश, पं. रमेश शास्त्री, जे.पी शुक्ला, अरुण सूद, मनोहर लाल, डा.वी.के. भनोट, वेद प्रकाश भंडारी, वजीर चंद, अमरेश, अमरनाथ टांगरा, संजीव बस्सी, सतपाल मोंगा, विनोद गांधी, सरोज गम्भीर, निधि सरीन, शालू शर्मा, वीना गुलाटी, श्वेता सेतिया, सीता रानी, प्रदीप पाहवा, अनिल गौतम, हितेन्द्र, मनीश मदान, अश्वर्ज लाल गुलाटी, विजय गुलाटी आदि उपस्थित रहे।

विजय सरीन प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 69 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 69वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी और आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रश्मि घई जी यज्ञ करते हुये। चित्र दो में यजमानों का स्वागत करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी एवं चित्र तीन में मंच पर विराजमान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम एवं अन्य विद्वान।

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 69वां वार्षिकोत्सव दिनांक 18 नवम्बर से 25 नवम्बर 2018 तक बड़ी धूमधाम एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी दिल्ली के प्रवचन तथा पं. देव आर्य दिल्ली के भजन हुए। 18 नवम्बर को प्रात: प्रभातफेरी निकाली गई। 19 नवम्बर से 24 नवम्बर तक प्रात: काल की बेला में आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। 24 नवम्बर को स्व. श्री विजय सेठी जी की याद में उनके परिवार द्वारा भजन संध्या करवाई गई जिसमें सुमधुर भजन गायकों के भजन हुए। दिनांक 25 नवम्बर 2018 रविवार को 51 हवनकुण्ड़ों पर सामवेद परायण यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम एवं आर्य समाज के पुरोहित पं. सत्यप्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार ने मन्त्रोच्चारण करके यज्ञ सम्पन्न करवाया। सभी श्रद्धालुओं एवं यजमान परिवारों ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान करके पुण्य प्राप्त किया। यज्ञ के ब्रह्मा एवं अन्य विद्वानों एवं सन्यासियों ने सभी यजमान परिवारों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। पं. देव आर्य ने यज्ञ प्रार्थना करवाई। यज्ञ के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी मुख्य अतिथि थे। अलग-अलग स्थानों से आये हुये डी.ए.वी. स्कूल के बच्चों ने भजनों के माध्यम से अपनी प्रस्तुतियां दी। दिल्ली से आये भजनोपदेशक पं. देव आर्य ने अपने मधुर भजनों के द्वारा सबका मन मोह लिया। उनके भजनों को सुनकर सभी श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। श्रीमती रश्मि घई जी ने अपने मधुर कण्ठ के द्वारा प्रभु महिमा का भजन गाकर आई हुई संगत को झूमने पर मजबूर कर दिया। मुख्य वक्ता आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने अपने प्रवचन में पुरूषार्थ की महत्ता पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि हमें जीवन में पुरूषार्थ करना चाहिए, हमारा जीवन पुरूषार्थ से पूर्ण हो, हम कर्म करते हुए जीवन में आगे बढ़े। आर्य समाज मॉडल टाऊन के महामन्त्री श्री अजय महाजन ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। आर्य समाज मॉडल टाऊन के प्रधान एवं डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली के सचिव श्री अरविन्द घई जी ने आये हुए सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया और कहा कि आपके पुरूषार्थ एवं सहयोग से ही हमारा कार्यक्रम सफल हुआ है। भविष्य में भी आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहे, परमात्मा से यही कामना करता हूँ। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

अजय महाजन
महामन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज मोगा का 114वां वार्षिक महोत्सव धूमधाम से मनाया

आर्य समाज मोगा का 114वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी को सम्मानित किया गया। चित्र दो में आर्य समाजों से पधारे हुये महानुभावों को सम्मानित करते हुये श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी, जबकि चित्र तीन में शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्यों के साथ संयुक्त चित्र खिंचवाते हुये श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य।

आर्य समाज मंदिर मोगा का 114वां वार्षिक उत्सव 19 नवम्बर से 25 नवम्बर 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज में यजुर्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन कर इसमें सब के भले के लिये आहुतियां प्रदान की गईं। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य महावीर जी मुमुक्षु मुरादाबाद एवं मधुर भजनोपदेशक पं.राजेश प्रेमी जालन्धर के भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। आचार्य महावीर जी मुमुक्षु ने ईश्वर विषयक चर्चा करते हुये अपने प्रवचन में कहा कि ईश्वर के अनेक नाम हैं लेकिन उन सभी नामों में से सबसे उत्तम व निज नाम ओ३म् है। उन्होंने कहा कि ईश्वर से बढ़कर इस संसार में कोई भी नहीं है क्योंकि ईश्वर सकल जगत के कर्त्ता, धर्त्ता और संहार कर्त्ता है। वह जड़-चेतन आदि सभी का स्वामी परमेश्वर है। जिसको ईश्वर के विषय में ज्ञान हो जाता है वह ईश्वर के ओ३म् नाम का ही ध्यान करता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है, उसके अनेकों गुण कर्म स्वभाव होने से अनेकों नाम है। ईश्वर कोई आकार या मूर्ति न होने के कारण ईश्वर का स्वरूप निराकार है। सर्वव्यापक होने के कारण मनुष्य के अच्छे व बुरे कर्मों को देखता है और कर्मों के अनुसार प्रत्येक को उसका फल देने वाला है। उन्होंने कहा कि ईश्वर से प्राप्त तन एवं जीवन के अन्य समस्त संसाधनों को मिलने से उसका धन्यवाद करना हमारा परम धर्म है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विशेष रूप से नवांशहर से पधारे थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से सभी को अवगत करवाना है। देश को आजादी से पहले अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करवाने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष सहयोग रहा है। उन्होंने कहा कि भारत अंग्रेजों के चंगुल से आजाद तो हो गया है लेकिन आज भी देश में हम सामाजिक बुराइयों से जकड़े हुये हैं। आज देश में भ्रष्टाचार, भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करना समय की जरूरत है। इस अवसर पर श्री अमित शास्त्री जी, सुनील शास्त्री जी एवं श्री दिवाकर भारती जी ने वेद पाठ किया। आर्य समाज के गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर पधारे हुये थे जिन में सर्वश्री प्रियतम देव सूद, जतिन्द्र कुमार गोयल, पुरुषोत्तम गोयल, स्वर्ण शर्मा एडवोकेट, बोध राज मजीठिया, सुरेन्द्र मोहन, आचार्य सुनील आर्य, श्री अमित शास्त्री जी, श्री राजेश अमर प्रेमी, राज कुमार विशाल, जे.सी. मेहता, श्री इन्द्रपाल पलटा, निर्मल शर्मा, राजन सिंगला, आर्य समाज के मंत्री श्री अमित बेरी जी, सत्य प्रकाश उप्पल, नरेन्द्र सूद, समीक्षा शर्मा, हेमन्त सूद, राजेश सूद, विकास गुप्ता, जोगेन्द्र पाल, पवन सिंगला, परवीन शर्मा, रमन वधवा, विजय मदान, श्री राजन सिंगला कोषाध्यक्ष, श्री अनिल गोयल उपस्थित थे। मोगा की आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी एवं अध्यापकजनों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुमन मल्होत्रा जी ने आए हुये सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। अंत में सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

अमित बेरी मंत्री आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।